॥ श्री सद्‌गुरु प्रसन्न ॥

लहरी भजन स्फुर्ती

[हिन्दी व मराठी भजने]

★

लेखक –

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी बाबा

किमत ४-५० रुपये

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी बाबा
कामठा

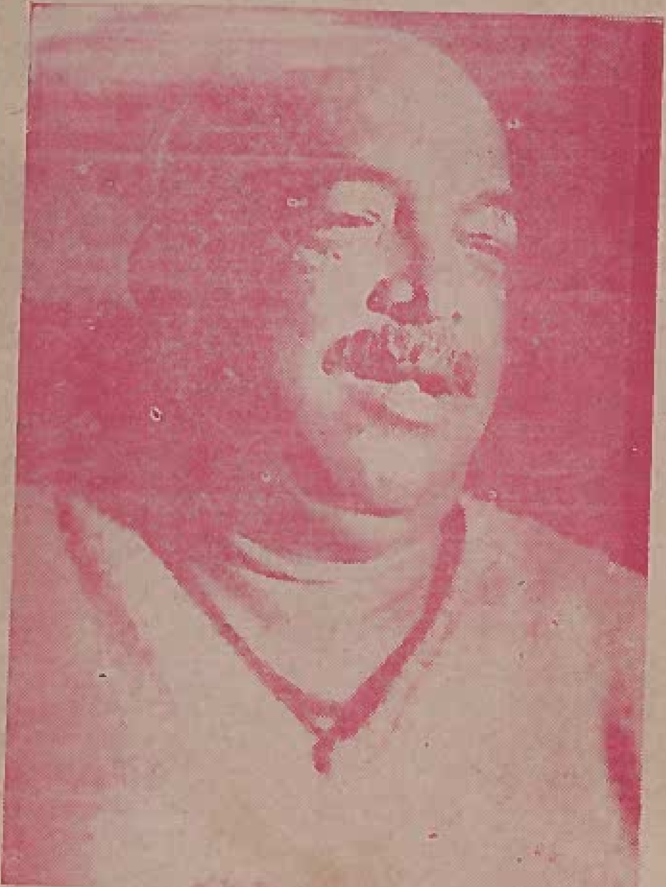

आश्रम कामठा त. गोंदिया जि. भंडारा

जन्म तिथी ७-१२-१९२२

॥ श्री सद्गुरु प्रसन्न ।

ॐ

लहरी भजन स्फुर्ती

[हिन्दी व मराठी भजने]

★

लेखक –

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी बाबा

किमत ४–५० रुपये

प्रकाशक

श्री संत जैरामदास

★

प्रबंधक

लहरी आश्रम

मु. पो. कामठा,

त. गोंदिया जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

★

प्रकाशन तिथी गुरु पोर्णिमा ३ जुलै १९९३

★

प्रथम आवृत्ती २०००

सर्वाधिकार प्रकाशकाचे स्वाधीन.

पुस्तक मिळण्याचे ठिकाण :

श्री लहरी आश्रम, कामठा

त. गोंदिया जि. भंडारा.

★

मुद्रक

प्रो. दिपक कृ. भागवत

भागवत प्रिन्टींग प्रेस,

टि. हाऊस चौक, भिवापूर जि. नागपूर

—० संदेश ०—

प्यारे भाईयों,

आज भौतिकवाद चरण सिमापर पहूँच रहा है। जीसे विज्ञान युग में विकास और उन्नती का प्रतिक माना जाता है। किन्तू इतनी उपलब्धी हासील करने पर भी हम सुख, शांती, सम्मान, समाधान की बजाय द्वेष, ईर्षा, भय, अनादर, असंतोष का अनुभव कर रहे है। इसका मुख्य कारण यह है की, अध्यात्म को हम भूल गये जो हमारी संस्कृती की आत्मा है। बिल्डींग बनाते चले लेकीन पहियाँ की ओर ध्यान नही। बिना अध्यात्म के कोई भी व्यक्ती आत्मविकास और सच्ची सुख शांती प्रदान नही कर सकता। अत: इस भौतिक विनाश को रोकने के लिये एवम् आत्मोन्नती साधने के लिए आध्यात्मका अनुसरण एकमात्र पर्याय है।

इस पुस्तक मे प्रपंच परमार्थ का सार, भौतिक आध्यात्मका भेद, इहलोक परलोक के साधन, सगूण निर्गूण का मर्म मानव जन्म का कर्तव्य, भक्तिका रहस्य, मुक्ती, मोक्ष के उपाय, गुरुकृपा का महात्म्य तात्वीक रुप से निरुपण किया है। जो आपकी उन्नती एवम् जीवन का कल्याण साधने में निश्चित रुप से सार्थक सिद्ध होगी इसमें कोई संदेह नही।

शरीर सुख के वास्ते भौतिक विज्ञान की आवश्यकता है परंतू आत्मिक सुख के लिये अध्यात्मका ज्ञान लेना गोपनीय रहेगा। आज पाश्चात्य देश के लोग भगवान है ये मानने लगे है। इसिलीये भारत के देवी देवता की

पूजा अर्चा कर रहे है। इसका मुख्य कारण, अुनके समझ मे आया की आध्यात्मिक ज्ञान बिगर सच्ची सुख शांती नही है।

आध्यात्मिक ज्ञान के लिये भौतिक उन्नती भी आवश्यक है, साथोसाथ अखंड सुख शांती पाने के लिये हमे आध्यात्म के ओर अग्रेसर होना आवश्यक है। करके पाश्चात्य देश में भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध, दुर्गा इनके कार्य के उपर अग्रेसर हो रहे है। इसलीये हमे भी विश्व के सब प्राणी के लिये सुख शांती मिले ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। यह आध्यात्मिक ज्ञान से ही प्रगत हो सकता है।

इस भारत बर्ष में प्राचिन कालसे ही हर धर्म के, हर मजहब के महापुरुषोंने पूरा जीवन अध्यात्मिक ज्ञान में ही बीताये। करके ही भारतीय विज्ञान के आचार्य राम, कृष्ण, बुद्ध, माता दुर्गा आदी हो गये। इन्होने ही भगवान का खोज किया और उसकी अनुभूती ली।

भगवान प्राप्ती करने के लिये साधक को नश्वर शरीर मे ही अुसका खोज करना होगा। जैसे दुधसे से घी निकलता है लेकीन वह निकालने के लिये साधना करनी पडती है। भगवान इन आंखो से देखा नही जाता। और हाथसे छुया नही जाता। जैसे ऋतूएँ अपने समय पर आती है और जाती है लेकीन वह दिखती नही बल्की अुसका हमे अनुभव होता है। इसिमुताबीक साधक को साधना के उपर चलते चलते अुसकी अनुभूती होती है। जैसे गर्भवती बाई को गर्भधारना के बाद उसे पूत्र का अनुभव आता है उसी तरह भक्त भक्ती के राहपर चलते समय उसे भगवान का आता है।

संत जैरामदास

-: अनुक्रमणिका :-

हिन्दी विभाग

भजन क्र.	शिर्षक	पेज क्र.
१	नर से नारायण होवे	१
२	मैं हुजूर का मजूर	१
३	पकडलो संतो का	२
४	ज्ञानी से बडा विचारी	३
५	आज देखो छल कपट	३
६	कब तक चलेगी तुम्हारी	४
७	अपनी अपनी कौम की	५
८	वचन के पक्के होते संत	५
९	निभाते है सब के वादे	६
१०	तन भी जायें धन भी जाये	६
११	मानव धर्म को निभावो	७
१२	ऐ मेरे मन उधर	८
१३	गरीबों का दुख	८
१४	धन्य माँ भागरता	९
१५	सुख की जिंदगी	१०
१६	राम नाम बीन	१०
१७	जैसा बदले जमाना	११
१८	मानव मानवता से	१२
१९	तन मन जन में	१३
२०	सभी धर्म का, सभी जाती का	१३
२१	कहाँ भगते जा रहा	१४
२२	तन का बल	१५
२३	नेकी बदी को देखके चल	१५

भजन क्र.	शिर्षक	पेज क्र.
२४	भक्ति बीना न मिले मुक्ती	१६
२५	गरीबों के हम	१७
२६	भगवान मेरे वतन को	१८
२७	सोई किस्मत को आजमाने	१८
२८	इमानदारी से कर्तव्यदारी	२०
२९	मीठे ढग की मीठी बनी	२०
३०	ग्राम यही मंदिर मेरा	२१
३१	सच्चे को है मेरा साथ	२२
३२	माथे पे चंदन है	२२
३३	तेरी पुजा तूही जाने	२३
३४	लिजोरे खबरियाँ मोरे सावरियाँ	२४
३५	साम्प्रदयिक वाद बढते चला	२५
३६	सब जीव प्राणी एक समान	२६
३७	तू दुख हरणी	२७
३८	तडफ रहा है जीया मोरा	२७
३९	मानव की भ्रष्ट हुयी मति	२८
४०	रोग आते है पाप रस्ते	२९
४१	दुनियाँ मतलब की साथीं यार	३०
४२	हमे ना दुनियाँ का ये डर	३१
४३	मेरो मन हरिनाम का भायो रे	३१
४४	मेरा पिछडा समाज	३२
४५	मेरा खून मराठा	३३
४६	बिघड रही है प्रेम की बाते	३३
४७	झुठ लफंगे लोग बेशरम	३४
४८	संतो की राहों पर	३५

भजन क्र.	शिर्षक	पेज क्र.
४९	समय को देखकर चलना	३६
५०	जिसको समाज का सच्चा हित	३६
५१	संतो के विचार उँचे	३७
५२	वतन का ख्याल है जिस नर को	३८
५३	अलाल आदमी यम का मेहमान	३९
५४	जाती पाती ना देखो किसी की	४०
५५	श्रम करके जो जीवीत रहे	६५

-: अनक्रमणिका :-

मराठी विभाग

भजन क्र.	शिर्षक	पृष्ठ क्र.
१	परिस्थितीला पाहून पुढे	४२
२	जो ज्यासी आवडला	४३
३	आज युगात गोष्टी चा बाजार	४३
४	आज जगी पाहीले खोटारडे लोक	४४
५	म्रझे गाव आहे तिर्थ	४५
६	तूच विघ्न हरणी	४५
७	मुर्खाचा बाजार जिवाची हानी	४६
८	जय जय राम कृष्ण जय हरी	४७
९	पुजेत देव दुजा	४८
१०	गरीबा नाशोबी भाजो भाकरी	४९
११	मानव मानवतेने वाग	५०

भजन क्र.	शिर्षक	पृष्ठ क्र.
१२	नमो देवराया तवचरणी माथा	५०
१३	राम नाम वीन कोणी नाही रे सुखी	५१
१४	सुधारणा आपुल्या कर्मांती करा	५२
१५	नवे जुने कोणी नाही	५२
१६	त्यांच्या कार्याचे काय महत्व	५३
१७	सगुण पुजा करी तू देहावरी आहे	५४
१८	सुधारावा व्यवहार सुंदर ते माधों	५५
१९	गरीबा जवळ आहे इमानदारी	५५
२०	सज्जनानी नेहमी सत्यतेने वागावे	५६
२१	संताचे स्वभाव बाळा प्रमाणे	५७
२२	आईचे प्रेम बाळावरी जंसे	५७
२३	प्राण्या तू दोन दिवसाचा पाहुणा	५८
२४	जगी कोणाची करावी आस	५९
२५	आपुले दुःख मी सांगू कुणा	५९
२६	माझे ना या जगी कोण	६०
२७	शरीर तिजोरी श्वास तूझे धन	६१
२८	संताच्या सान्नीध्यात सुख शांती मिळे	६१
२९	मानव जीवनाचा करु नको मातेरा	६२
३०	आत्म सुखाचा मार्ग गाठ	६३
३१	देश धर्माचे कार्य कराया	६४

★★★★★

॥ ॐ ॥

लहरी भजन स्फुर्ती

भजन क्र. १ (तर्ज-- अगर है ज्ञान को पाना)

नर से नारायण होवे, अपने कर्म परख लेवे ॥

अज्ञाणी को ग्यानी बनाये, वोही देवता कहलाये। ।टेक॥

दृष्टी समता की है उसकी, कोई न रहने पाये कष्टीं।
जीवन में हरीयाली लाये, कही कमतरता न होवे। ।१॥

दुखीयों के लिये तडप मनमें, सुख शांती मिले उनमें।
सबकी बिगडी बनायें, सच्ची राह दिखाये। ॥२॥

दरिद्रो का दरिद्र नारायण, भक्तों का है वो भगवान।
भ्रमिष्टो के भ्रम मिटाये, दानव को मानव बनाये। ।३॥

जैरामदास कहे परखे, बिन नर है कंगाल।
लिख पढ के पंडीत भये, व्यर्थ बजाये झुठी गाल।
व्यर्थ जीवन मत खोये, अंत में हाथमल रोये। ॥४॥

भजन क्र. २

म हुजूर का मजूर सेवा मेरा काम
मानदारी का ही लेता हूं मै दाम
अरे खाता नही अरे खाता नही किसी की फुकट की छदाम
करता हूं काम मै सुबह शाम ॥टेक॥

निष्काम भावना की मेरी है भक्ती
उसीमें मुझको मिलती है शांती

हर जीवसे मेरी जुडी है प्रीती
दया धर्म करुणा यही मेरी नीती
हरीनाम का मै हरदम पीता हूँ जाम ॥ १ ॥

हरदम भरोसा है मेरा सत्य पर
उसीके बलपर ही रहता हूँ निर्भर
दानवीय वृत्तीका मुझको नही डर
चाहे कोई प्राण मेरा लेता हर
अरे चिंता नही किसकीं, मेरा रखवाला है राम ॥ २ ॥

मैंने घर बनाया, देखो सारे बिश्व को
तीनो लोगों का राज भी फीका लगे मुझको
गुरु की कृपा पाया हु मैं सार
मंझधार की नैय्या, हुई मेरी पार
जीव जगत का भेद मीटा कहता जैराम ॥ ३ ॥

भजन क्र. ३

[तर्ज- विश्व ची घर भासुनी]

पकडलो संतोका ये साथ, जिवन में तब होगा विकास ।
षडविकार तेरे होगें नाश, छोड दे पराई ये आस ॥ टेक ॥

खेल है माया का संसार, भूले मत इसमें तू रे यार
बनो मत माया का ये दास ॥ १ ॥

तू है क्षण घडीं का मेहमान, किसका कर रहा गुमान
अंत समय कोई ना आये पास ॥ २ ॥

देख ना झुठा ये सपना, धन परिवार न होये अपना
संत ही तोडे जन्ममृत्यू फास ॥ ३ ॥
भजन बीन कोई न हुये पार, सब खेल झुठी ये बकवास
जताये तुझे ये जैरामदास ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४

[तर्ज– जो आवडतो देवाला]

ज्ञानी से बडा विचारी, वो ही मानवता का पूजारी

निष्काम भाव जिसकी वृत्ती, सेवा भाव में बहती मती।
सभी देवता करे स्तुती, वो ही सबका कैवारी ॥ १ ॥

जनता में ही जनार्धन देखा, अपना पराया भेद न रखा।
नितीका है वो तो पक्का दुष्ट सज्जन से प्रीत करी ॥ २ ॥

माटी सोना एक ही जाना, सुख दुःख एक समाना।
निर्भयता का उसका बाना, उसका जगमें नही कोई बैरी
॥ ३ ॥
जैराम कहे गावो ऐसा गाना, कलियुग में सतयुग है लाना
भाई चारे का नाता निभाना, सतयुग का वो ही है पुढारी
॥ ४ ॥

भजन क्र. ५

आज देखो छल कपट का हो रहा है बोलबाला।
इमानदार और सत्यवान जा रहा है कुचला ॥ टेक ॥
श्रम करनेवाला भुखा मरता, दर दर की वो ठोकरे खाता
कही ना उनको ठिकाणा मिलता, रातदिन तडपते रहता
विषमताही बढते चली, न्याय निती को लगा ताला ॥ १ ॥

सका माल उसका बेहाल, गुंडें लोफर बने दलाल
ीबो के हो रहे बेहाल, उसको न मिले आटा दाल
ाखोरी और काला बाजार, समाज में बढ रही बुरी बला
॥ २ ॥

ृ जैराम ऐसे नितीसे, देश का हो रहा बेहाल
पको न रोका जाय तो, मानवता का होगा विनाश
ाचो समझो मेरे भाईयो, जता रहा हुँ मै खुल्ला-खुल्ला
॥ ३ ॥

भजन क्र. ६

(तर्ज जनम जनम का साथ तुम्हारा हमारा)

ब तक चलेगी तुम्हारी चालाकी, आये दिन भरने के
गवान के घर अन्याय नही, चली नही शेखी रावण की
॥ टेक ॥

ोले जनको सताते रहते, उनको ही लुटते जाते
हंकार में दबाते रहते सुख शांती से जीने न देते
कसको सुनाये मुसिबत की बाते सुननेवाला कोई न बाकी
॥ १ ॥

नो से ये बहती धारा, कहाँ गया कँवारी हमारा
डप तडप से रहा बेचारा, नैय्या कैसे लगे किनारा
ान्न–अन्न से तरस रहें है कौन सुने पुकार इनकी ॥ २ ॥

ुखीयों की दैना भरी कहानी, इसका कोई है क्या वाली
ाच्चे सपुत हो मातृभूमी के तो,लाओ इनके जिवन में हरीयाली
कहना सुनो गुणवान धनवान, अर्जी है ये जैराम की ॥ ३ ॥

भजन क्र. ७

अपनी अपनी कौम की प्रगती करना यही उन्नती है।
धर्मं निती से चल करके यही हमारी ख्याती है ॥ टेक ॥

बंधू भावना फ़र्ज निभाना, दिन दुखीयों को गले लगाना
अग्यानी को ग्यान देकर धर्मं निती से चलना
गांधीवाद को साकार करना यही हमारा धर्मं है ॥ १ ॥

फुकट का ना किसीका खायेंगे यही हमारा धर्मं हैं।
कर्मं अपने परख के चलना, यही हमारा धर्मं है।
जिम्मेदारी अपनी निभाकर इसमें ही सुख शांती है ॥ २ ॥

किसी प्राणी का द्वेष ना रखे, आत्मा से आत्मा जोडना है।
निच ऊँच का भेद मिटाकर, विषमता को मिटाना हैं।
जैराम कहे अग्यान भुलकर जोडो सबसे प्रीती है। ॥ ३ ॥

भजन क्र. ८

वचन के पक्के होते संत
निर्माण किये शास्त्र ग्रंथ ॥ टेक ॥

विचार शक्ती की बहे वो धारा,
ज्ञानी धनी ना पाये पारा
किसने न लगाये इसका अंत ॥ १ ॥

सारे विश्व की है सीमा,
पार न पाये उसकी महीमा
उनके बोलसे जीव प्राणी होवे क्षुब्ध ॥ २ ॥

जैराम कहे नित नूतन भाषा,
दिन दुखीयो को देता दिलासा।
नही समझे तो है मतीमंद ॥३॥

भजन क्र. ९

निभाते हैं सबके वादे पूरी करता है उनकी मुरादे ॥
वोही है सच्चा विधाता, उससेही जोडो तुम नाता
रहो न उससे कोई जुदे ॥१॥

भ्रमीष्टीयोंका भ्रम मिटाकर, सच्ची राहे उन्हे दिखाकर.
बन जाते है खुदा के बंदे ॥२॥

कही ना पडे कमतरता उसे, कर्म करता हैं निर्भयता से
प्रपंच परमार्थ उसका सदो ॥३॥

जिसकी लगन है देश धर्म की, दृष्ट प्राण हरले उसकी
बदले ना कभी अपने इरादे ॥४॥

जैरामदास कहे सुखमय जीवन, रामनाम का है धन
निभाया मानवता के वादे ॥५॥

भजन क्र. १०

तन भी जाये धन भी जाये,
फिर भी अपने प्रणको निभाये ॥
फीक्र नही हैं किसी बात की, सेवा करें दिन दुखीयो की
सत्त धर्म का नारा लगाये ॥१॥

देश समाज का है वो दुलारा, मातृभूमी का सपूत प्यारा
भुले को वो राह दिखायी ॥ २ ॥

सभी जीवो को देवता समझे, कमतरता ना पडे उनको
उनके खातिर शरीर झिझाये ॥ ३ ॥

करे पुजा चलते फिरते देवता की, रखकर श्रद्धा निष्ठा भाव की
जड जीवो को हरदम जगायी ॥ ४ ॥

जैंराम कहे गुरु वचन का पक्का मानवता का हैं वो सखा
इसमें ही सुख शांती को पाये ॥ ५ ॥

भजन क्र. ११

(तर्जः– तुमसे मिलने को दिल करता है ।)

मानव धर्म को निभावो – बाबा २
अजी अपना सुंदर जीवन को बनावो ॥ टेक ॥

यह संसार हैं झूठा सपना, कौन होवे कब यहासे बीराना
माया ममता का बीज न बोओ ॥ १ ॥

क्षण भंगुर हैं काया तेरी, रह जायेगी महाल अटारी
अज्ञानता में धोका न खाओ ॥ २ ॥

किसकी रात और किसका दिन है,
पल घडी का है तू मेहमान
नेक काम की कमाई कमाओ ॥ ३ ॥

नीती धर्म का मार्ग पकडलो, बंधूभाव का नाता निभाओ
जैरामदास कहे भुल ना खाओ ॥ ४ ॥

भजन क्र. १२

[तर्ज- ऐ मेरे हम सफर एक नया]

ऐ मेरे मन उधर चल जरा गुरु के द्वार
कह रही है सब दिशायें बाते सार की ॥टेक॥

दौडता फिरेगा तू कहाँ तक, राहे अनेक है।
घुमकर वही फिर आये, मंजील तो एक है।
हो जा खडा गली में SSS मूलाधार की ॥ १ ॥

लक्ष बनाले तू अपना, सब राहे बंद कर।
स्वादिष्ठान में कुंडलीनी, सोई है जागृत कर
मनीपुर में है उल्टी SSS सर्पाकार की ॥ २ ॥

झुलकर हिंगेले अनहद में, संभल संभल कर चल।
विशुद्ध अग्नि से होकर, आज्ञा पे हो जा अटल।
उस देगी बच चलना SSS वो नागिन फनकर की ॥ ३ ॥

आज्ञा गुरुकी तू लेकर, सहस्त्रदल तक खींच।
सत्रावी के जलसे उसको, धीरे-धीरे तू पी।
आना संभल के पागल SSS कहे जंराम पारखी ॥ ४ ॥

भजन क्र. १३

गरीबो का दुःख देखकर, नैनो में आता है पानी।
किसको बताऊँ अपनी कहानी, मेरी दर्द भरी वाणी। टेक ॥

अपने परसे जगको परखा, वोही विचार मनमे रखा।
दर-दर की मैं ठोकर खाया, आप बिती बतलाया।
परिवार ने साथ न दिया, सभीने किये हैं परेशानी ॥ १ ॥

चलती के सब संगी साथी, मुसीबत मे कोई ना संगाती ।
कर्म से ही रहते कोई भाई, भाग्य उदय करण है ।
दुःख दरिद्री मीट जाती है, छोड दो सारी नादानी ॥२॥

अग्यानता ही पाप मूल है, यही सबसे भुल है ।
विचार कर ले अपने मन मे, जीवन सुखी बनाना है ।
जैराम कहे कर्म साधने से, भाग्य बनता धनी ॥३॥

भजन क्र. १४

धन्य माँ भागरता, तेरे दरपे आये है ।
हीन दीन बालक तेरे, सर चरणो मे झुकाये है । ॥टेक॥

लिये अवतार तुमने, खुशीयो छाई घर-घर में
पतीत को करने, तुम आयी थी भारत में
कैसे हमें छोड गयी, नैन आसू भर आये है ॥१॥

पाये जीवन साथी कामठा में, मीलकर स्वर्ग बनाये है
रहकर लहरीके चरणो में, अधम को पावन बनायें है ।
अजब महीमा है तेरी, कैसे गुण को गाऊ मै ॥२॥

जन्म दी गोपाल तुकड्या को, देखी बालक सभी को
रखी सम दृष्टी सबके उपर, ऐसा प्यार दी बच्चो को ।
क्षण-क्षण में याद तेरी, कैसे तुम बीन जीवू मै ॥३॥

दुर्गा अष्टमी के दिन, कैसे छोड गयीं हम सबको
रह गये भक्त खडे, नही जाने तेरे मर्मको ।
रह गयी याद तुम्हारी, सभी भक्त गण रोते है । ॥४॥

अष्टमी की पुण्यतिथी, सब मिलाकर मनाते है
दे दो आशीष माता, तेरे चरणो में आये है।
रहे नाम तेरा युग युग में, श्रद्धांजली हम देते है ॥५॥

भजन क्र. १५

(तर्ज इश्क बचाये)

सुख की जिंदगी, कर्मो की भली
उसकी ही किर्ती जगमे फैली ॥टेक॥

क्षण भंगुर है तेरी काया, धरती पर ना कोई रह पाया
तेरी उमरीयाँ ढलते चली ॥१॥

कोई न तेरा यहा साथी, चलती के है कुटुंब संगाती
बोलो सबसे मीठी बोली ॥२॥

प्रेम का नाता निभाले चल, जीवन तेरा होगा सफल
वाणी सत्य की कभी ना टली ॥३॥

जैराम कहे इन्सानियत की बाते, अपने वादे निभाते रहते
उसको जिवन मुक्ती मिली ॥४॥

भजन क्र. १६

(तर्ज अच्छा सिला)

राम नाम बीन सारा झुठा सपना
कौन पराया कौन है अपना ॥टेक॥

जीवन की नैय्या मंझधार अडी है
गुरु बीन कौन लगाये थडी है
छोडो–छोडो–छोडो सारी झुठी कल्पना ॥ १ ॥

परखले जावो अपने हीत की बाते
व्यर्थ में स्वांस क्यों होते ही जाते
नही तो पडेगा आना जाना ॥ २ ॥

तन माटी है धन हैं माटी
साथ में कभी ना आये लंगोटी
माया में क्यों बनता है दिवाना ॥ ३ ॥

जेरापदास कहे चिडीयाँ रैन बसेरा
सोचा हुआ सब रहेगा अधुरा
बीना भजन के व्यर्थं है जीना ॥ ४ ॥

भजन क्र. १७

[तर्ज- बेदर्दी से प्यार] [तर्ज- सोचेंगे तुम्हे प्यार करते नही]

जैसा बदले जमाना वैसा गावो गाना
इंतजार समय का, करते ही, रहना ॥ टेक ॥

समय सुचक ज्ञान ना जिसमे
जीवन उसका हैं अधुरें में
अंधकार में है. जीवन सुना ॥ १ ॥

ज्ञान बुद्धी की जिसकी जोडी
उसे मिले जिवन हरियाली
बाकी है सब बहाना ॥ २ ॥

जहाँ तक रवि, वहाँ तक कवी
उसके परे है, संतो की बानी
ना समझे तो पिछे है रोना ॥ ३ ॥

जैराम परखो ज्ञान से ज्ञानी
बिरले ही समझे संत वाणी
जाने उसका छुटे, आना जाना ॥ ४ ॥

भजन क्र. १८

(तर्ज– बहोत प्यार करले)

मानव मानवता से, करले ये प्यार
मीट जाये सारी, झंझट तकरार ॥ टेक ॥

सबके हीत में, अपना हीत समझे
हरी नाम रात दिन भजले रहते
बिताये सारी उसमे उमर ॥ १ ॥

सब जीवो को, मिले शांती
जिसमे होवे सबकी उन्नती
सबकी भलाई का, करे बिचार ॥ २ ॥

तन छोडने पर नाम छोड जाना
अमर रहेगा तेरा युग–युग गाना
इन्सानियत का यही हैं सार ॥ ३ ॥

कहता जैराम, सुवर्ण घडी
पूर्व पुण्य से, तुझको मिली
समय ना मिले, बारंबार ॥ ४ ॥

भजन क्र. १९

[तर्ज- राम नाम]

तन मन जन में प्रभूका है वास
ऐसी कोई जगह ना सुना है निवास ॥टेक॥

पाया जिसने परमात्मा का अनुभव
सभी ठिकाणे मिला, शांती वैभव
किसी बातकी उसे कमी ना पडे
हुवा जीवन का विकास ॥ १ ॥

भक्ती भाव की जीसकी दौलत
राम नाम कि किया अनामत
ऐसा मानव सभी को भावत
हरी बीन रहे सदा वो उदास ॥ २ ॥

जैराम कहे ऐसा मतवाला
पीकर ब्रम्हरस का प्याला
वही सच्चा गुरु का चेला
लगा ऐसा जिसे निजध्यास ॥ ३ ॥

भजन क्र. २०

सभी धर्म का, सभी जाती का है वो देखो भारती
मानवता का धर्म निभाये, पुजा करे; सुविचारकी ॥ टेक ॥

ऐक पें अटल श्रद्धा रखो; बताते येशू ज्ञान
दया भाव को हृदय मे धरलो, जतलाते है राम
बुद्ध ने पंचशील बताकर, रक्षा की परिवार की ॥ १ ॥

ऊँच निच का भेद न जानें पर जीवो की दया
भावना जैसी मनकी हो, भगवान सब में समाया
दिन दुखीयोंको देके दिलासा, रीत सिखलाई प्यार की ॥२॥

कितनी भी आपत्ती आये, तत्व से ना ढले।
प्राण भी चाहे हरले कोई मौत लगाये गले
जैरामदास कहे ऐसे नरके, कृष्ण बने है सारथी ॥ ३ ॥

भजन क्र. २१

(तर्ज– भज गोविंदा भज गोपाला)

कहाँ भगते जा रहा, यम तेरे पिछे आ रहा
छोडे ना तुझको रे नाहक उमर क्यो बीता रहा ॥ टेक ॥

मानव शरीर पा करके, दानव क्यों तू बन रहा
स्वर्ण संधी मिली तूझें, मुफ्त में जीवन गमा रहा
पूर्व पुण्य से नर तन पाया, विचार ना उसका कभी किया
॥ १ ॥

अधर्म की राहे पकडा, जीवन अपना बरबाद किया
प्रेम का मार्ग भूल गया, चाम से तूने प्रीत किया
गधारी के तेरे काम भजा ना राम रमय्या ॥ २ ॥

पाजी शरम गधातूरे, धर्म कर्म तू भूल गया
दिन दुखीयों की रहम न तुझको किया न तूने किसकी दया
जैरामदास कहे सून मुर्ख, जन्म मरण में फस गया ॥ ३ ॥

भजन क्र. २२

[तर्ज– त्रीलोक पती दाता सुख धाम]

तन का बल और धन का बल
ज्ञान से करता तू रे छल ।।टेक।।

गर्व गुमान की तेरी बाते, भुला बंधुत्व के नाते
दिन दुखीयों को जाता सताते, पीर पराई भावे न बाते
हमदर्दी ना किसी कि देखा, कभी ना बोला मीठा बोल ।। १ ।।

मुरखता का व्यवहार करे, पाप पुण्यका ना किया विचार
भोले जनसे करता तकरार, मानवतासे किय न प्यार
अज्ञान में जीवन खोया, बुराई से मुखडा मोड ।। २ ।।

जैराम कहता पापी हरामी, आया किसके कामी
जन्म लेकर निकला अधर्मी, राम दरबार में निकलेगी गर्मी
जन्म मरण टल ना जाये, अंत में जायेगा हात मल ।। ३ ।।

भजन क्र. २३

[तर्ज तेरी उम्मीद तेरा इंतजार]

नेकी बदी को देखके चल, पायेगा सुख तु रे
जैसी भावना वैसा फल, मिलेगा तुझको रे ।। टेक ।।

प्रभु का नाम तू रे भजते चल
जीवन नैय्या होगी रे तेरी सफल
धर्म कर्म से नाता जोड, आया भुमी पर रे ।। १ ।।

छल कपट से उमरीयां बीत चली
गरीबो की लिया रे तू ने बली
बाते करता है, मनचली, पुण्य का ना विचार रे ॥ २ ॥

मानवता के करतातू रे बैर
अधर्म की करता तू रे सैर
तू बना दूष्ट कर्मो का साथी, पाप का न रखा उसे ॥ ३ ॥

कहता जैराम तेरे कहानी का फल
माफ ना होगा करले तू रे सबर
किस को छुटी रजा, इश्वर को तू डर रे ॥ ४ ॥

भजन क्र. २४

[तर्ज- बेदर्दी]

भक्ती बिना न मिले मुक्ती
कर्म ही होवे अपने साथी ॥टेक॥

प्रयत्न बिन है जिवन सुना
तब मानवता का सुख पाना
मिटे न उसकी भूली भ्रांतीं ॥ १ ॥

बीना परखें कर्म जो करे
सारे कार्य रहे अधुरे
मिले न जीवन में उसे शांती ॥ २ ॥

भाग्य का उदय प्रयत्न के बिना
कोशीश करे हर कोई कितना
होवे सच्ची उसकी उन्नती ॥ ३ ॥

कर्म संचीत की है जोडी
परखे बीन न नाव लगे थडी
जैराम कहे मिटे तब बिपत्ती ॥ ४ ॥

भजन क्र. २५

[तर्ज– मनी नाही भाव]

गरीबो के हम, उसका ही हमें दम
किसी बात की न पडती कम रे SSS
झीजते रहे उनके लिये तन रे ॥ टेक ॥

उनकी दया से हमें मिलती है शांती
दुखीयों की सेवा करना हमारी भक्ती
धर्म से करते काम, मुख से भजते राम,
वही हमारी शान रे ॥ १ ॥

चलते फिरते भगवान की करते है पुजा
उसके बिना धर्म हमें दिखे न दुजा
मनमें निष्काम भाव, नीती में पंढरी राव,
पवित्र रखे मन रे ॥ २ ॥

कहे जैराम दया धर्म रखे पाल
दिन दुखीयो के सहन करना चाल
होवे जीवन विकास, षडविकार हुये नाश
वो ही सच्चा सबका मित्र रे ॥ ३ ॥

भजन क्र. २६

भगवान मेरे वतन को आकर सुखीं बनादे
लेकर के निती नियम को, सभी पूर्ण करो वादे ॥ टेक ॥

किसी को किसी बात की पडेना कही भी कमतरता
समता के भाव रखकर, एक दूसरे की. हरे विपदा
सलोकत से चलकर के, निभाये अपने वादे ॥ १ ॥

संघटन के पुजारी बनकर प्रेमभाव रखे दुजे पर
मन से हटाकर द्वेशभाव, चले सभी संत के पथ पर
परखे अपनी जिम्मेदारी, बिचार छोड वो गद्य ॥ २ ॥

सबकी भलाई हो वो ही बाते करे भाई चारे की
प्रेम देना प्रेम लेना, सीखाये निती मानवता की
रखे ख्याल देश धर्म का, पुरे करे अपने वादे ॥ ३ ॥

कहे जैराम भुल ना होवे, निती के ही प्रीती से
चाहे तन से प्राण जाये, भूल ना पडे वचन से
कुछ ना मांगु तुमसे, पूर्ण करो मेरे मुरादे ॥ ४ ॥

भजन क्र. २७

[तर्ज– सुन भई चंपा]

सोई किस्मत को आजमाने जग जा तूरे अनजाने
अच्छे कर्म का करले वादा सत मार्ग से नित चलते जा
॥ टेक ॥

संतो का मानलो कहना, बडो का आदर करना
प्यारे सच हरदम बोल
जिसने प्रभू से नाता जोडा, सुख शांती को पायेगा
सबका भला जो चाहता है, इस जग से वो तर जायेगा
दिन दुखीयों को तरसाये और अभिमान की बात करे
माया के सपने देखे जींदे रहकर है मरे
इसलिये वेदो ने कहां है ॥ १ ॥

धर्म की राह धरना, अनादर से नित डरना
संत इशारे को तू तौल
इनके वचन निभाना है हरियाली जीवन में लायेंगे
प्रभू के नाम को गाना है, ज्योती से ज्योत जलायेंगे
सुख सभी को पहुचाये और समता के भाव धरे
हीत अपना ही परखे अनहीत से रहे परे
इसलिये यहाँ आये है मानव धर्म का ॥ २ ॥

अमर तत्व को पाना, प्रेम गंगा बहाना
निज धन है अनमोल
जिसने देखा एक ही सबमें, फिर ना कमतरता रहे
जिधर भी मुढ जाता है उधर प्रभू को पाता है
जो ऐसा नाता निभाये, भवसिंधू से तरे
अपने आप को देखे, सुरत से किरत घडी
इसलिये जैराम कहता, अच्छे कर्म करे ॥ ३ ॥

भजन क्र. २८

[तर्ज :- अवताराचे कार्य कराया]

इमानदारी से कर्तव्य दारी, यही नाता है मानवता का
भूल न होने पावे इसमे, प्रंपच बने सुख शांती का । टेक ।

खाये ना कोई किसका फुकट का, भगवान साथी बने उसका
वो ही मित्र है ये समाज का, काम करता अपना हक का
॥ १ ॥
उसके बलपर चलता देश, सच्चा लगन का उसका उद्देश
चीड है उसे झुठे राह की, निती धर्म का वो पक्का ॥ २ ॥

चाहे कितना धनी ग्यानी हो, प्रेम को न उसकी वाणी है
दुख न समझा दीन दुखीयों का, है वो भार पृथ्वी का ॥३॥

जैरामदास कहे सुनो भाई, इन्सानियत से जो चलता
कही न पडती उसे कमतरता, उसने ही किर्ती जग नें रखा

भजन क्र. २९

मीठे ढग की मीठी बानी, दगे बाजो की यही निशानी
परख करते है उनके गुणो को, वो ही संत मुनी ॥ टेक ॥

शद्व से तत्व को जाने, कितनी करे बनवाटी बाते,
कितना जो भी छुपाये, छुपते नही संतो से बहाने
नकल असल के गाये गाणे, परख अच्छे कर्मो की ॥ १ ॥

मानव तन पाकर अभागा, अग्यानीयो को देवे दगा
वो ना होता किसका सगा, सथ्य नही है उसके जुबा
रहम नही है किसीका उसको, वाणी है कुट नीती की
जैराम कहे ऐसे शैतान ॥ २ ॥

भजन क्र. ३०

[तर्ज– मुझे प्यारा भारत मेरा]

ग्राम यही मंदिर मेरा, नर नारी शंकर गौरी हो
सुविचार के फुल चथाऊँ, प्रेम देकर प्रेम लेऊ
यही अस्तित्व हमारा ॥ १ ॥

ज्ञान खराटा हातमें लेकर, उज्वलता लाऊँ कुटनीती पर
साफ करुं षडविकार कचरा ॥ २ ॥

विवेक मशाल चेतन करके, भेद भाव अंधकार निकले
फैलाऊ उजियारा ॥ ३ ॥

मनके भाव पवित्र बनाकर, सभी आत्मा एक मानकर
देखू ब्रम्ह ज्योत उजियारा ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे सुनो भाई, मानवताही मार्ग सही
परखत नांव लगे किनारे ॥ ५ ॥

भजन क्र. ३१

सच्चे को है मेरा साथ, करु ना झुठे से बात
यही है यही है मेंरा सिद्धांत ॥ टेक॥

दया धरम करुणा प्रीती, शिल नम्रता की हो निती
बंधु भावना जगी हो जिसमें, चले नेकी से दिन रात ॥१॥

मर्यादा सुकर्म की राहे. वो ही मेरें दिल को भाये
अपने बल बुते पर जाये, छोडकर पक्षपात ॥२॥

मिलनसार हो जिसकी वृत्ती, मती हमेशा ब्रम्ह में बहती
मानवता का हित दिखाये, वो ही मेरा तात ॥३॥

जैरामदास कहे पीर पराई, जाना उससे मेरी मिताई
ऐसे ही मेरें मित्र कहलाये, सतगुण ही मेंरी जात ॥४॥

भजन क्र. ३२

माथे पे चंदन, है मुख में राम, झुठमुठ के करते काम
संतधर्म को, किये बदनाम, भेष में दुनीयां मर जाती है
॥ टेक॥

फैले ढोंगी उस कदर, नजर आते जिधर उधर
भोले लोगो को फंसाये, जाल बीछाकर
हुई है इनसे बरबादी, हरकते करते है गंदी
सच्चा भीं कहलाये पाजी, लोगो मे हुयी है भ्रम बाजी
लगे ना मन इन राहो में, भजन पूजन इन भानो में

ना आदर रखते संत के वचनो में
लफंगों से विश्वास खोया खीसकते चला धर्म का पहिया
नीती पैंसो से बेच दिया, सुखी अपना संसार किया
ठग बांनी के करते कुकर्म ॥१॥

बीगड रही है यहां समाज में प्रेम की बाते
बडें को छोटा ना माने अपनी ही मारे वो ताने
अश्लीलता के गाये गाने, शराब पिकर दिवाने
नही इनको फीकर घर की, होली होगई इनके तनकी
थोती बाते बडबडाते पुराणो की
ये ऐसे गुरु भ्रम में डाले, भूले है अनीती में चले
हमेशा प्रभूकी जय बोले, है कर्म मगर उनके उनके ढीले
कहो वैसा चलो कहता जैराम ॥२॥

भजन क्र. ३३

[तर्ज झुठ बोले कौआ काटे]

तेरी पुजा तूही जाने, हम क्या जाने अनजान
क्या देखता क्या परखता हमारा तू दिदार ॥टेक॥
तू हर डगर डगर में है, और तू हर नगर नगर में है
तूही बसा है सभी खबर में, तूही चंद्र सुरज नभ में
चौदा भुवन प्रकाश उजीयारा ॥१॥

जाने बीरला भेद तीहारा, जिसने आप में आप निहारा
कहीं पर तू पत्थर बना है, कही पर दरीयाँ की धारा
पेड पुल बनकर तू दिखता, तू ही सुंदर प्यारा ॥२॥

निर्धन तू, धनवान भी तू है सत गुणों का सीतारा
बगीचों में तू माली बनकर नीर की सीचे धारा
अज्ञानी तू और ज्ञानी तू ध्यान धारणा तेरा पैंतरा
सबमे रहकर है तू चतरा, माया में रहकर अपना आप
उठाये खतरा ॥ ३ ॥

सच्चा तू है कच्चा तू है, विश्व रुप निर्धारा
अजन्मा रहकर मरना मिटना ये है खेल हरदम तेरा
जैराम कहे जैसे को तैसा, तुझको किसीने नही बनाया
तू है स्वयं अविनासा, रोगी तू है भोगी तू है सबमें
तेरा पसारा ॥ ४ ॥

भजन क्र. ३४

[तर्ज– लिजो रे खबरिया]

लिजोरे खबरियाँ मोरे सावरियाँ
भुलियों न मोरे दुखियाँ की बत्तियाँ ॥ टेक ॥
पुजा न जानु कैसे चढाऊँ फुल पत्तियाँ
आजा मेरें भगवन भर देरे झोलियाँ
द्वार खडा हूँ बतला दे विधियाँ ॥ १ ॥

कई जन्मो का हूँ मै भूला जानू नही राहे
अनजाना राही हूँ मै जीया घबराये
बढा देरें बैट्या तु रें खिवट्या ॥ २ ॥

तेरे हाथों मे मोरी डोरी रे सावरियाँ
बनी बिघडी का तू ही है रखवैय्या
सत्ता बिन तेरे हिलतो न पत्तियाँ ॥ ३ ॥

त्रस्त हो गया हूँ देख माया का झमेला
कोई ना साथी तुझ बीन पडा हूँ अकेला
भूले का सहारा तू हो राधा के रमैय्या ॥ ४ ॥
एक बार दर्शन दिजो बिनती है मोरी
पतित को पावन किजो, सुनी देह नगरी
चरणो में तोरे जैराम आया ॥ ५ ॥

भजन क्र. ३५

सांप्रदयिक वाद बढते चला,
मानवताके पिछे आ रही है बला ।
इसको बचाने ले ले संतो से सलाह,
मानवताके पिछे आरही है बला ॥ टेक ॥

क्रोध हिंसा की लहरे मंडरा रही है ।
सत्व धर्म कर्म डुब रहा है ॥
आज देखो, दया धरम, डुबते चला ॥ १ ॥

कोई कहता अपने को विद्‌वान ।
गर्व गुमान की बताये शान ॥
सट्टा शरब में बना मतवाला ॥ २ ॥

मानव दानव की चल रही लढाई ।
किसी की रहम किसको न आयी ॥
माया ममता में ये है भूला ॥ ३ ॥

मानव मानव से जूडेगी प्रिती ।
तब ही मिलेगी सही सुख शांती ॥
जतला रहा हूँ खुलम खुला ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे हित की बाते ।
नही समझो तो खावोगे गोते ॥
एकता में ही है सबका भला ॥ ५ ॥

भजन क्र. ३६

सब जीव प्राणी एक समान, दया धरम का यही है निशान
संतमुनीं का ये ही है ज्ञान, इसलिये कहलाते पुज्य महान
॥ टेक ॥

पर दुःख देखकर दुःखी होते ।
उनके सेवामे तन को झीजाते
देश समाज का होवे कल्याण, जिसमें मिले उन्हे समाधान
॥ १ ॥

एक ही धर्म एक ही जाती
जिसमें होवे सबकी उन्नती
बंधुत्व भाव को मिले सम्मान, दूष्ट प्रवृत्ती होवे निसंतान
॥ २ ॥

सत्य अहिंसा का सभी का नारा
विश्व शांती का मंत्र हमारा
जैरामदास के बात पर देना प्यारे ध्यान, धर्म में छुपा है
मर्म महान ॥ ३ ॥

भजन क्र. ३७

तर्ज – बापा मोरिया रे

तू दू:ख हरणी, तू सूख हरणी दूर्गा तू आदी माता ।
तू अनंत रुपी, तूम हो तपी, तेरी त्रिलोकी गाथा ॥टेक॥
शरण में जो कोई आये, संकट से पल मे छुडाये
शांति धैर्य तू दिलाये, सुख आनंद हो पाये ॥
तू भिद्र रक्षणी, असुर मर्दाणी, हले न तेरे बिन पत्ता ॥१॥

निर्धन की भरती झोली, बांझ बने पुत्रवाली ।
तेरा वचन न जाये खाली श्रद्धा भाव से पुजे सवाली
जैसी जिसकी भावना करे, पूरी कामना वैसी निभाती जाती
॥२॥

बढे पृथ्वी पर अत्याचार, तब तब लेती अवतार ।
सिंह पिठ पर होके सवार, हाथ में लेके खप्पर ॥
तू तलवारधारी, तू शुंभकारी, भक्तों की विजय कराति
॥३॥

सुनले मेरी तू करुणा पुकार, आकर मीटा दे भ्रष्टाचार
जहाँ वहाँ फैला अत्याचार, कोंई यहाँ न मददगार ॥
प्रार्थना जैराम की रक्षा दिनन की । बचाओं धर्म डुबता
॥४॥

भजन क्र. ३८

तडफ रहा है जीया मोरा, समाज सुखी होवे ॥
गरीब अमीर ऊँच निच ये भेद भाव मीट जाये ॥टेक॥

सभी जिवों को शांती मिले, मानवता बच पाये ।
धर्म निती के मार्ग पे चलकर, सुख से जीवन बीताये ॥
एकमेक को गले लगाकर, प्रेम का दिपक जलाये ॥ १ ॥

सत्यव्रत का बाणा लेकर, दिल में हो अमृतवाणी ।
कि तना भी हो कामि क्रोध्री, मुर्ख बनजाये ज्ञानी ॥
काला बाजार गुंडागर्दी, तनिक न रह पाये ॥ २ ॥

अपना पराया भेद न रखें सबका हित परखे ।
किसी पर ना अन्याय होवे, ऐसा सबक सिखाये ॥
महागुरुओ के वचन निभाकर, संस्कृती टिकाये ॥ ३ ॥

श्रीरामदास कहे भाई, सत्कर्म हमारे साथी ।
इसी में ही भरी है, तुम्हारी हमारी उन्नती ॥
तभी बचेगा देश धर्म, निती अमल में लावों ॥ ४ ॥

भजन क्र. ३९

[तर्ज– ये मेरा प्रेम पत्र पढकर]

मानव की भ्रष्ट हुयी मती, छोडी है इमान की निती ।
फसल ना दे रही खेती, जगत में फैली अशांती ॥टेक॥

भ्रष्टाचार का बोल–बाला, सज्जन जा रहा है कुचला ।
जो झुटा अलाल निकला, दूजे का माल हडप चला ॥
समाज में बुरा रोग फैला, निकल चली बंधूभाव की प्रिती
॥ १ ॥

जकडे है तेरे मेरे में, एक दुजे की बुराई मे ।
नही दयाभाव इनके दिल में, उमरियाँ खो रहे है छल में
शिल नम्रता के नही भाव, इसी से आयी विपत्ती ॥२॥

जाती पाती का बडा जोर, मानव--मानव से हो रहा दूर
देखेना अपना कोई कसूर, कहता अपनेकोहि शूर
इसी से फैली है व्यथा भडक रही क्रोध की वृत्ती ॥ ३ ॥

भाविक पिढी निर्माण होवे जीव जग सुख शांती पावे ।
तेल बिन दिप न जल पावे, सत्य बिन शोभा न आवे ॥
कहे जैराम देव मानव, एक दूसरे से है दोस्ती ॥४॥

भजन क्र. ४०

[तर्ज-- ये मेरा प्रेम पत्र पढकर]

रोग आते है पाप रस्ते, रोग जाते है नाम जपते ।
निभाये स्वहित के नाते, चलते जा सत्य को देखते ॥ टेक ॥
तेरा तू ही है साथी, वैसे ही दिखे तूझे मूर्ती
होवे जैसी तेरी वृत्ती, दृष्टी में भरी है प्रचिती
नही मित्र शत्रू किसका, भ्रम में क्यो खाता गोते ॥ १ ॥

सब कुछ बुद्धि का ही फेरा, अज्ञान से माया में गीरा ।
देख जन स्वरुप नजारा वैसे ही हो जावे भवपारा ॥
मीट जाए भेद ये सारा, जीव जब ब्रम्ह को पाये ॥ २ ॥

निष्ठा में ही है प्रतिष्ठा, दृष्य जगत में वो बैठा ।
श्रद्धा में है तेरा देवता, मन में भाव जैसे रखता ॥
उससे ही ये शांती पाता, उससे ही उमर जाये ढलते । ३ ।

जीवन ज्योती से विवेक ज्योती, खोजके आत्मबल शक्ती ।
मिलने की यही मुक्ती, कर चित्त मन बुद्धि से भक्ती ॥
जैरामदास भक्ती बिन मुक्ति, संत ही ज्ञान को देते ॥४॥

भजन क्र. ४१

[तर्ज– मैंने पुजन को भगवान]

दुनियां मतलबकी साथी यार, इनसे कौन करेंगा प्यार ।टैक।
स्वारथ हित की करे ये प्रिती, स्वारथ बिकलते करे
ज्यादती

कैसा होगा इनसे उद्धार ॥ १ ॥

जब तक तन में है ये शक्ति, धन माया से करें वो प्रिती
विपत में साथ न देवे नार ॥ २ ॥

अच्छे के सब मिलते संगी, बुरे दिनों पर कहे अभागी
जन्मा पृथ्वी पर ये भार ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे दुनियादारी, इससे अच्छी लगे फकीरी
छोड दो झुठा ये जंजाल ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४२

हमें ना दुनिया का ये डर, हमारा साथी है इश्वर ॥टेक॥
एक से हमने नाता जोडा, मोह माया से मोडा मुखडा ।
भरोसा हमारा है हम पर ॥१॥

दुनिया की ये चीज ना भाये, कोई हमें लड्डू पेढा देवे ।
इच्छा ना लुभाये उसपर ॥२॥

तिरथ यात्रा माल खजाना, देवे कोई चांदी सोना ।
दिखे हमें सभी बेकार ॥३॥

राम नाम की मिली हमे गठडी, वो ही सबसे बडा भाग्य शाली
जैराम कहे किया जीवन उद्धार ॥४॥

भजन क्र. ४३

मेरो मन हरिनाम को भायोरे ।
कब मिले वो साव रो ॥टेक॥
भजना नही के लागे लगत वो ।
थांबे से ना थांबे ॥१॥

चढत चढत सुरत लगे जब ।
ब्रम्ह पद पाये रे ॥२॥

लड्डू पेढा माल मिठाई ।
इसको नही छुयोरे ॥३॥

समझाने से समझत नाही ।
रमापती रम जायो रे ॥४॥

अमृत का प्याला भर भर पीये ।
कोई उसको आवोरो ॥५॥

नेरामदास कहे निर्भय बनकर ।
निराभय भजन गायो रे ॥ ६ ॥

भजन क्र. ४४

[तर्ज– मेंरी छोटी सेनाव]

मेरा पिछडा समाज, इसे बदल देना आज
ऊंचाँ होवे देश सरताज रे ॥ टेक ॥

पडेना कमतरत्ता किसी चीज की,
निती जूडी रहे मानवता की
दिल में रहे बंधुभाव, प्रेम का पडेना अभाव
तभी रहे देश सरलाज रे ॥ १ ॥

जिम्मेदारी अपनो आप निभाये
फुकट का कोई किसका न खाये
तन मन से करें काज, तब टिका रहे राज
मिले सभी जीवों को मौज रें ॥ २ ॥

अज्ञानी को ज्ञानी ये ज्ञान बाटे
द्वेष भाव का ये कलश मिटे
होगा समाज सुधार, सब का होगा उद्धार ॥
कोई ना रहे अनजान रे . ॥ ३ ॥

भजन क्र. ४५

[तर्ज- तेरे जैसा यार कहाँ]

मेरा खून है मराठा, कर्तब्य से कभी ना हटा ।
देशधर्म के लिये हुआ, अधर्मी को हरदम पीटा ॥टेक॥

खाना मुफ्त का ना खाये, तन को हरदम झिजाये ।
बलबुते पर अपने, हमेशा ही जिये ॥
सज्जन के लिये हूँ मीठा ॥१॥

भाईचारे का मेरा नाता, पुरखो के वचन निभाता ।
दिल ही से समायी रहती, शिल और नम्रता ॥
दुखियों के लिये तन लुटा ॥२॥

चिढ अन्याय पाखंडी की, उनके बुरे कर्मो की ।
ना सुनी बात कभी भी मैंने अन्याय की ॥
उनसे रहा हरदम रुठा ॥३॥

जैराम कहे सतपर भरोसा, जाती पाती से नही नाता ।
सद्‌गुरु है मेरा दाता और विधाता ॥
उनके चरणों मे सर झुकाया ॥४॥

ज्ञान की बाते सब के हित की
निती भरि मानवता की
बने स्वावलंबी जीवन करे संतो का ये संग
मुख से हरिनाम भज रे ॥४॥
आध्यात्मीक ज्ञान से सुखशांती मिले
धैर्य हिमंत कभी ना फिसले
कहे दास जैराम – नेकी से करे काम
निभाओ अपना फर्ज रे ॥५॥

ति]
ता के नाते ।
के ना सुनते
॥टेक॥

भजन क्र. ४५

[तर्ज– तेरे जैसा यार कहाँ]

मेरा खून है मराठा, कर्तव्य से कभी ना हटा ।
देशधर्म के लिये हुआ, अधर्मी को हरदम पीटा ॥टेक॥

खाना मुफ्त का ना खाये, तन को हरदम झिजाये ।
बलबुते पर अपने, हमेशा ही जिये ॥
सज्जन के लिये हूँ मीठा ॥१॥

भाईचारे का मेरा नाता, पुरखो के वचन निभाता ।
दिल ही से समायी रहती, शिल और नम्रता ॥
दुखियों के लिये तन लुटा ॥२॥

खिढ अन्याय पाखंडी की, उनके बुरे कर्मो की ।
ना सुनी बात कभी भी मैंने अन्याय कीं ॥
उनसे रहा हरदम सठा ॥ ३ ॥

जैराम कहे सतपर भरोसा, जाती पाती से नही नाता ।
सद्गुण है मेरा दाता और विधाता ॥
उनके चरणों मे सर झुकाया ॥४॥

भजन क्र. ४६

[तर्ज– रोग आते है पाप के रस्ते]

बिघड रही प्रेम की बाते, भूल रहे मानवता के नाते ।
दया धरम जा रहा खस्ते । छोटे ये बडो के ना सुनते
॥टेक॥

झुठ मुठ का बोल बाला, सज्जन जा रहा कुचला ।
गुरु आज्ञा पाले ना चेला, शब्द पर ना विश्वास जो रखते
॥ १ ॥

भेष बनाकर साधू का, धन लुटते हैं गरिबों का ।
ना बिचार पाप पुण्य का करते है उपरी छलकी बाते
॥ २ ॥

नही ठिकाणा बोल वाणी, खुद को कहे आत्मज्ञानी ।
सुधरी ना इनकी रहनी सहनी, जुबा पर ब्रेक ना रखते
॥ ३ ॥

परखते नही कर्म अपने, देख रहा झुठा ये सपना ।
दास जैराम कहता है, चलो ऐसे पाजीयों से बचते
॥ ४ ॥

भजन क्र. ४७

झुठ लफंगे लोग बेशरम, उसके लिये रहता हू गरम ।
जिसमे दया शांती प्रेम उसकी मुझे आती रहम ॥ टेक ॥

सत्कर्मो पर जिसका भरोसा, वही मेरे दिल का दिलासा ।
उसमें मिटे मेरी अंहम, वोही मेरा है रे प्रितम ॥ १ ॥

अमृत भरी जिसकी बानी, चाहे कितना हो मुर्ख अडाणी ।
उससे मेरी प्रिती घनी, उसकाही स्वागतम् ॥ २ ॥

सब जीवो से जिसका हीत, वो ही मेरा सच्चा मीत ।
न्याय नीती से जिसकी प्रित, दृष्टी जिसकी है वो सम ॥ ३ ॥

संस्कृती का अटल सिद्धांत, जैराम कहे वो मेरा भ्रांत ।
रामनाम का गावे गीत, उसने बचाया देश धरम ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४८

संतो की राहो पर चला जो भी,
उसका वचन कभी ना टला ।
सबका किया भला ॥टेक॥

इन्सानियत की उसकी निती,
सब जीवो से जोडी प्रीती ।
होवे सबकी जगमें उन्नती
मानवता की देवे सला ॥ १ ॥

अपने पर से जग को परखे,
देखे सबको अपने सरीखे ।
अन्याय जा सहे छल कपटीयों के,
दूष्टो को हरदम कुचला ॥ २ ॥

अग्यानता में भूले भटके,
माया ममता में है लटके
खुदको ना उसने पैछाना,
कैसा होवे जीवन उजला ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे मुझे चिता,
इनका अग्यान दु:ख मिटावो भगवंता ।
निभावो मेरा सेवकाई नाता,
प्रण निभा भक्त वत्सला ॥ ४ ॥

भजन क्र. ४९

[तर्ज– तेरे पुजन को भगवान]

समय को देखकर चलना, कभी ना पडे पछताना।
आये कितनी भी कठीनायी, कभी इससे ना घबराना
॥टेक॥

रखो भरोसा सत्यका, तोल ना बिगाडो मन का।
दृढ निश्चय कर अपना, धैर्य से विमुख ना होना ॥ १ ॥

मुसीबत कितनी भी सरपर, छोड दो कार्य इश्वर पर।
दानविय शक्ती को ना डर, विश्वास अपने पर अपना
॥ २ ॥

भुलोना कभी अपनी राहे, परमपद जो मिलवाये।
कहे दास ये जैराम, मानवता का रखले ध्यान ॥ ३ ॥

भजन क्र. ५०

[तर्ज– एक राधा एक मिरा]

जिसको समाज का सच्चा हित वोही है सबका हित
उसको ही गावो तुम गीत, होगी हरदम हमारी जीत
॥ टेक ॥

संकल्पका है वो पक्का, कर्तबगारी निभाये
अटल हैं वो सिद्धांती, कभी ना भूल खाये
तन मन और ध न की' जिसने निछावर किया
उसका दुश्मन जगमे ना रहा, वोही समाज का सच्चा सपूत
॥ १ ॥

हरवक्त वो तैयार रहता, अपने प्रणको निभाया
नवजिवन सबको दिलाया, अज्ञान भ्रांती मिटाया
वोही सच्चा है ज्ञानवंत, उसे कहते है भगवंत
जैराम कहे सुख शांती का दाता, उसका पकडो तुम साथ
॥२॥

भजन क्र. ५१

[तर्ज– स्वतंत्र]

संतोके विचार उंचे, उसमे छुपे है सत्कर्मो के परचे
॥ टेक ॥

परखे बिना, मानव ना बनें सच्चे
ज्ञान की रश्मी बीखरी है उनके बोल मे
कभी ना फौल होंवे खोजो अपने दिल मे
मुढ अज्ञानी बने शहाना, पलमें उसकी भ्रमजा
तन त्यागने पर, किर्ती रहे पिछे ॥१॥

चाँद सुरज आसमा ढले
सत्य की बानी कभी ना टले
उसके सत्ता बिन पत्ता ना हिले
जड चेतन उसके बल पर खिले
बिचार उसके हैं उँचे ॥२॥

सिद्धांती ही तत्व परखे
शिवको तरने अमृत चखे
वेदांती शंकाकुशंकामे लटके
माये के हरदम खाते झटके
मुमुक्ष जीवके लिये ग्रंथ रचे ॥३॥

जैरामदास कहे साक्षी हमारा हैं इतिहास
ईश्वरीय शांती है सभी के पास
मत रखो तुम पराई आँस
निरामय सृष्टिका लगावो ध्यास
तेरा तुम्ही है देवता बाकी झुटी है चर्चा ॥ ४ ॥

भजन क्र. ५२

[तर्ज - अगर है ग्यान को पाना]

वतन का ख्याल है जिस नरको ।
सपूत वोही मातृभूमीका ॥
देश समाज का वो दुलारा ।
पक्का वो है धर्म नितीका ॥ टेक ॥

कितनी भी आये मुसीबत ।
हारेना हिम्मत कभी अपनी ॥
रहता है हर वक्त वो ।
देने को ये कुर्बानी ॥
पर्वा ना जनम और मरन का ।
निभाया नाता संस्कृती का ॥ १ ॥

दिन दुखीयों से करता प्यार ।
दया धर्म की है पतवार ॥
हात मे धर्म की तलवार ।
अधर्म का किया संहार ॥
सत्कर्म का पहना बाना ।
दुलारा सब जीवोंका ॥ २ ॥

कहे दास जैराम ।
इसको कोई ना भुलो ॥
उसके बताये वचनो पर ।
हरदम चलना तुम सीखो ॥
वोही समाज सुधारक है ।
पुजारी है मानवता का ॥ ३ ॥

भजन क्र. ५३

[तर्ज– सोचेंगे तुम्हे प्यार]

अलाल आदमी यम का मेहमान ।
परिवार को किया हैरान ।
मिलाना उसको कही भी स्थान ॥ टेक ॥

जायें कही भी सुख ना पाँये,
दुख ही दुख सरपे उठाये ।
भ्रम में सारे उमर ना उठायें,
घर का रहे ना घाटका रहे ।
इन्सानियत पे नही दिया ध्यान ॥ १ ॥

मन मे नही उसके शांती,
मीटी नही मनकी भ्रांती ।
बिच भँवर में अडी है किस्ती,
घट गयी है उसकी निती ।
रात दिन चिंता सताये दुविधा में जान ॥ २ ॥

जैराम कहे अज्ञान निद्रा से जागो,
बुराईयों के मार्ग को त्यागो।
संत कर्मो को मित्र बनावो,
जीवन में उज्वलता पावो।
बनो जगत में किर्तीमान ॥ ३ ॥

भजन क्र. ५४

जाती पाती ना देखी किसीकी, सद्‌गुणही मेरी जात
सिद्धांत का मै हूं अटल करु ना पक्षपात,
दया धरम करुणा का हृदय में है वास।
चाहे कितनी आये मुसीबत ना हो उदास,
काज मेरे कौन बिगाडे प्रभू है साथ ॥
बोलो जय मानव बोलो-बोलो जय मानव ॥टेक॥

काम क्रोध त्यागा हूं हरिनाम जागा हूं,
रख के गुरु बाणी मे विश्वास।
काम मै करता हूं कभी ना डरता हूं,
दिन दुखीयों की सेवा की है आस।
मुझको है चिढ झुठे अन्याय की,
करता हूं मै कदर सत्य राय की।
मेरा संकल्प, अज्ञानी का विकास ॥ १ ॥

सारा विश्व ही मेरा घर है,
उसके सुख के लिये मैं झटता हूँ।
मेरे परिवार पर अन्याय जो करे,
न्याय के लिये सदा डटता हूँ मैं।
इन्सानियत की देखो मेरी निती,
सत्य कर्म से हरदम मेरी प्रिती।
ऊँच-निच भेद का किया मैंने नाश,
जन्म यदि देना संत चरणों के पास ॥ २॥

जैराम कहे गुरु कृपा से,
अपने आप को पाया हूँ मैं।
मेरा डिप्लोमा नही है यहाँ का,
जानता हूँ राज मैं अगम निगम का।
चाहते हो शांती, करो संत सहवास ॥ ३॥

मराठी--
विभाग

मराठी विभाग

भजन क्र. १

परिस्थितीला पाहून पुढे पाऊल टाक
तेव्हा तुझा जीवनाचा होईल उद्धार ॥धृ.॥

विचारा पासून करावा आचार,
आचारा पासून घडे व्यवहार ।
प्रपंच परमार्थाचा तेव्हा मिळे सार ॥१॥

हिताचा मार्ग पाहून चाल,
सर्वांचे हीत होईल ऐसे तू बोल
जन तुझ्या कर्माचे करती जय जयकार ॥२॥

निती धर्माचा मनी ठेवी प्रेम,
मग तुला कुठे पडे नाही कम ।
आला जन्माचा करी तू विचार ॥३॥

जिथे मिळे तुला सुख शांती,
तिथेच करी तू रे वस्ती ।
संत वचनाला हृदयी धर ॥४॥

जैरामदास म्हणे ठाम करी मत,
त्याविन कुठे मिळे नाही तथ्य ।
संकट समयी मानू नका हार ॥५॥

भजन क्र. २

[चाल- चित्ती राम माझ्या]

जो ज्यासी आवडला, तोच त्याचा देव झाला ।। धृ ।

भाव ज्याचे जसे मनी, तोच बसे त्याचे स्थानी
संकट समयी धावूनी आला ।। १ ।।

जशी ज्याची असे भावना, तसे पुरी करी कामना
भावनेत देव त्याला दिसला ।। २ ।।

प्रत्येकाचे भाव अनेक, निरनिराळे त्याचे रुप
जैराम जिवन सफल झाला ।। ३ ।।

भजन क्र. ३

[चाल- मुरलीधर गोपाल]

आज युगात गोष्टीचा बाजार आहे गरम
वाड वडिलाची नाही ठेवत लाज शरम ।। धृ. ।

थोरांचा ना ठेवी मान, नेहमी करी अपमान
अहंभावाची दावी शान, विसरले मानव कर्म
गंजा, जुव्वा, सट्टा दारु,बाटली जनी अधर्म ।। १ ।।

स्वतःला हे हुशार समजती, आपली चूक ना पाहती
करुनी अत्याचार, याची भ्रष्ट झाली मती
परीस्थिती हो यांची बिघडली, नाही मन ठाम ।। २ ।।

जैराम म्हणे किती समजाऊ, ऐशा मूर्ख लोका
साधू संताची करती नेहमी, पाहा निंदा टिका
याचे पासून सावध राहून, भजावे राम राम ॥ ३ ॥

★

भजन क्र. ४

आज जगी पाहीले खोटारडे लोक
सज्जनाशी पडला आहे पश्चाताप ॥ धृ ॥

निघत चालली आज इमानदारी
सज्जनाशी ना मिळे कोणी कैवारी
सत्यवीन जगामध्ये कुठे न मीळ सुख ॥ १ ॥

गुंडा गर्दी वाले पहा, झाले मालोमाल
गरीबाचे आज झाले पहा बेहाल
न्याय ना मिळें ह्या लोकांना
जिवन काढी दु:खात ॥ २ ॥

जैराम म्हणे जगामध्ये अनितिच्या पायी
व्यथीचार वाढला पहा सर्व ठायी ।
आला तरी ऐक या गोष्टीला
संत वचन ना होई चूक ॥ ३ ॥

भजन क्र. ५

माझे गांवच आहे तीर्थ, आता कशाला फिरु मी व्यर्थ
बंधु भावाचा मीळे प्रेम, मर्यादाचा असे नेम ॥ धृ ॥

इमानदारीने करती काम, जीव्हाळ्याचा ठेवून व्रत
दया शांतीचे असे माहेर, कुणाशी न कुणाचे द्वेष वैर
एक दुसऱ्याच्या वेळेवर, जाई ते धावत ॥ १ ॥

माणूसकीला मीळे निष्ठा, दया धर्म ठेवून पोटी
सत्याशी हृदयी लाव, बोला मध्ये सर्वांचे हीत ॥ २ ॥

नाते यांचे मर्यादीत, लहान थोर वागणूकीत
प्रेम देई प्रेम घेई, भेद ना संस्कृतीत ॥ ३ ॥

जैराम म्हणे घेतला अनुभव कुठे पहावे दुजे देव
तीर्थात पाणी पाषाण, उठे मनी काव-काव ॥ ४ ॥

भजन क्र. ६

तूच विघ्न हरणी, तूच जगी तारणी, तूच अंबा माता
हे अनंत रुपा, कोण वर्णी माता, पदरी घे तू आता ॥धृ॥

दिन दुबळा मी बाळ, आता कैसे काढू काळ
रडून रडून झालो बेहाल, आता दुःख करती छळ
पाप वाढले जनी, स्वार्थ ठेविती मनी, विसरले हे मानवता
॥ १ ॥

भूवर वाढे भ्रष्टाचार, तेव्हा तेव्हा घेशी अवतार
मिटवी अभीमान अहंकार, नांदे सुख शांती चहूं ओर
भक्त रक्षणी असूर मर्दनी, सुखी केली भोली जनता ॥ २ ॥

केले शुभ नि शुभ, ठार केला महीषासूर
सिंहावरीं तू आरुढ, करी घेऊनिया खप्पर
लाल वस्त्र धारणी, गळा मुंड घालूनी, प्राषण केले रक्ता
॥ ३ ॥

म्हणे जैराम मुळ पिठनी, तुज वर्णु कोण्या वाणी
जिव्हा माझी गेली थकूनी, ऐसी अगाध तुझी करनी
ऐक विनवणी; आता ये धावूनी, भिदासी वाचवी आता
॥ ४ ॥

भजन क्र. ७

(चाल– कशाला पंढरी जातो रे बाबा)

मुर्खाचा बाजार जीवाची हानी, संगतीने ज्ञानी नाडी
॥ धृ. ॥

दुष्टावर जरी केला उपकार, करीना त्याचा विचार
सोडीना कधी आपुले चाळे, शेवटी करी वार
सज्जनाचा करी अपमान, गर्वाची त्याची वाणी
॥ १ ॥

स्वार्थी पुरतो करितो प्रिती, जैसी बगळ्याची मती
दुरंगी चालीची त्याची निती, मती जशी भूताची
खोट्या कामी खोवीला वेळ, मानवता गेला भूलूनी
॥ २ ॥

जैरामदास म्हणे रे बाबा, ऐशा पासूनी होई दगा
मानुनको यांना सोयरा सगा, येई दुःख पाठी मागा
खोटे समझु नको माझे बोल, वर्तावे सावधानो
॥ ३ ॥

भजन क्र. ८

[कैसी जाऊ मी अपुले दारी]

जय जय राम कृष्ण जय हरी, भाव नाही मनी अंतरी
देव पावेल कैसा जरी, भाव नाही मनी अंतरी
॥ धृ. ॥

दिंडी चालली पंढरी, विठू रायाची हे नगरी
कैसा दिसेल विटेवरी, भाव नाही मनी अंतरी
॥ १ ॥

टाळयांचा गजर होतसे, ढम-ढम ढोलकी वाजवतसे
ऐकू जाईल का श्रीहरी, भाव नाही मनी अंतरी
॥ २ ॥

कितंनात माना डोलती, जय जय कारे टाळ्या पीटती
देव देवळात चित्त खेटरी, भाव नाही मनी अंतरी
॥ ३ ॥

उच्चिष्ट बोरे अर्पिली, राम रामे स्नेहावली
व्यर्थ मिठाई टोपल्यावरी, भाव नाही मनी अंतरी
॥ ४ ॥

भावा पाशीं देव रे उभा, माझा पंढरपूरचा सखा
कृपा करील कैसा तरी, भाव नाही मनी अंतरी
॥ ५ ॥

देव भावाचा भूकेला असे, दास जैराम सांगतसे
कैसा होईल रे कैवारी, भाव नाही मनी अंतरी
॥६

★

भजन क्र. ९

[चाल– ऐसा है नाम तेरा]

पुजेत देव दुजा, श्रद्धेत देव माझा
धावूनी येतो काजा पंढरीचा तो राजा ॥धृ.॥

लई देव दगडाचे, सोने आणि चांदीचे
सर्व आपुल्या मताचे, प्रत्येक भावनेचे
मूर्ती तया ती दिसे, पुरवी तयांची गर्जा ॥१॥

जो देव सर्वा ठायी, जळी स्थळी त्यास पाही
त्याला उणे कुठे नाही, फिरे सर्व दिशा दाही
घेऊनी आत्म ग्वाही, ब्रम्हानंदी लुटी मजा ॥२॥

मिटे न माझा तुझा, तोवरी भोगी सजा
मिळे न कुठे रजा, होई न भ्रांती वजा
दुखी जीव राही तुझा, अनुभव संती घे जा ॥३॥

जैराम म्हणे ब्रम्ह एक कुठूनी करा माप
दुजे न कुठे भूप, पहा निरखूनी स्वरुप
तेव्हा मिटे त्रिताप, हरिनाम नित्य भजा ॥४॥

भजन क्र. १०

गरीबा नाशीबी भाजो भांकरी, कष्ट करोनी अपार
अजब तुझा हा न्याय ।।धृ.।। ईश्वरा अजब

चैनीत राहती गुंडे लोफर, कष्टाने कमविणारा झाला चोर
लपझप खोटे करीतो जो कर्म, आहे तो माला माल
।।१।। ईश्वरा अजब

सत्यतेनें जो चालतो, तोच या जगी नाडल्या जातो
क्षणो क्षणीरे SSS दुःख डोईवरी SSS झेली वारंवार
।।२।। ईश्वरा अजब

पतिव्रतेला मिळे न अन्न अब्रू वाचविणे झाले कठीण
रात्रं दिवशी SSS चिंतेत राही, झाली ती लाचार
।।३।। ईश्वरा अजब

वेड्या मौजेत राही थाटाने, महाल माडी रंगवे स्वप्ने
गुलाम बनुनी फिरती मार्गे विषयांचे सरदार
।।४।। ईश्वरा अजब

जैराम म्हणे कैसा खेळ कुणी हसतो कुणास रड
ऐसा भेद का SSS तुझीया जवळी SSS सांग मला करतार
।।५।। ईश्वरा अजब

भजन क्र. ११

मानव मानवतेने वाग, खोटे कर्माला त्याग ।
हृदय होतील तेव्हा तूझे भाग, सुविचार श्रद्धा भाव ठेवरे
॥ धृ. ॥

सर्व जीव तूझ्या सारीखे, मानू नको तू त्याला परके ।
द्वेष भाव त्याग, इमानदारीने तू वाग ।
जगी अमर किर्तीने तू जग रे ॥ १ ॥

सुंदर कर्मात देवाचे मर्म, तिथे भरले आहे दया धर्म ।
कर्म तुझे छान, जगी मिळे मान ।
तिथेच आहे तुझी शान रे ॥ २ ॥

मानव सेवा हीच देव पुजा, या सारीखा धर्म ना दुजा ।
श्रद्धेत देव तुझा, सर्व सोड खोटी भ्रमना ।
जैराम म्हणे अज्ञानाला तू त्याग ॥ ३ ॥

भजन क्र. १२

नमो देवराया तव चरणी माथा ।
संकट समयी धावत येई कांता ॥ धृ. ॥

तव वाचूनी जगी मज नाही कोणी ।
धर्म रक्षण्यासाठी येई चक्रपाणी ।
तुझ्या सत्तेवीण हालेना पत्ता ॥ १ ॥

बुडत्या धर्मांचा तुच कैवारी ।
शांती सुखाचा तुच आमचा वाली ।
तव वाचूनी कोणी ना आमचा विधाता ।. २॥

विधी विधानाचा तूच सुत्रधारी ।
तुझी महिमा मोठी भारी ।
दूष्ट संहारुनी भक्ताशी रक्षिता ॥३॥

देवाचा तू देव, भक्ताचा तू भाव ।
तूझिया सत्तेवीन चालेना जीवन नांव ।
जैरामदास म्हणे तुच हरण करता ॥४॥

भजन क्र. १२

राम नाम बीन कोणी नाही रे सुखी ।
मायेच्या बाजारात सर्व आहेत दुखी ॥धृ.॥

ईहलोकी आहे सर्व मायेचे खेळ ।
स्वार्था पायी दुसऱ्याचा ठेवीती वैर ॥
माणूसकीला थारा राहीला ना बाकी ॥१॥

हिताचा मार्ग मूलत चालले ।
दया धर्मामध्ये झाले हे वाटोळे ॥
सत्य कर्मा पासूनी झाले पारखी ॥२॥

कर्माचे नाही, ओळखत मर्म ।
कसा कळेल याला माणूसकीचा धर्म ॥
पाहत नाही आपुली कधीही चूकी ॥३॥

मायावी लोकांचा ठेवू नका भरोसा ।
धरु नका तुम्ही खोटी ही आशा ॥
जैराम म्हणे या पासूनी रहा पारखी ॥४॥

भजन क्र. १४

सुधारणा आपुल्या कर्माची करा ।
दैवी संपत्ती येई घरा ॥धृ.॥

उदह भाग्याचा कर्माचे हाती, अनुभवाची येई प्रचिती
अज्ञानाचा लागे ना वारा, दूर पळती विषय विकारा
॥ १ ॥

निष्काम कर्माची भावना जागे, मन परमानंदात लागे
उठती अंतरंगाच्या लहरा, बोध घेई विचार हा सारा
॥ २ ॥

विवेक बुद्धीने घेई प्रेरणा, चित्त स्थिर होई शांतपना
सुमनाचे फुले फुलती, सुगंध व्यापे जग सारा ॥ ३ ॥

जैरामदास म्हणे कर्महिन, संत संगतीने होई भाग्यवान
त्याला ना पडे कुठे उणे, सुखी त्याने केले जीवन
धन्य आहे ऐसा नर, चूकविला जन्ममृत्यू फेरा
॥४॥

भजन क्र. १५

[चाल- उघड नैन देवा]

नवे जुने कोणी नाहीं तुझे माझे नाते युग युगांत रचे
देवी देवताच्या पूर्वीचे, भूल पडली अज्ञानाचे पायीं
भ्रमणेत जीव राही ॥ धृ.॥

तूच आहे अमर अविनाशी, जन्म मरण नाही तुजशीं
हे तर आहे मायेचे खेळ, घेई अनुभव ग्वाही ॥ १ ॥

माया ब्रम्ह एकाठायी, काम आपुले वेगळे पाही
समझल्या वीन अपुरे राही, अंतरात शोधून पाही
॥२॥

जीव शिवाची होई भेटी कल्पना मिटे तिथे खोटी
एकात अनेक अनेकात एक, तूच सर्व ठायी ॥३॥

जैराम म्हणे गुरु कृपा, तुझा तुच आहे सखा
शेष शारदा थकले बापा, बिदूत साधू पाही ॥४॥

भजन क्र. १६

[चाल– जैरामाशी काय वर्णवे]

त्यांच्या कार्याचे काय महत्व ।
काढा शोधूनी त्यांचे मत ॥धृ.॥

मग जावे शरनांगत, तेव्हा मिटे तुमची भ्रांत
मिळे सुख शांती मनात ॥१॥

तत्व तत्वा पासूनी ओळखावे, ज्ञान बुदिध्र निरखावे ।
तेव्हाच घालावे आयुष्य त्यांत ॥२॥

बोल ते अनुभवाचे, आत्म्याला जे जे रुचे ।
तिथे आहे तुमचे हित ॥३॥

तुमचे मना जिथे शांती, तिथे करा तुम्ही वस्ती ।
बसू नका कोणी व्यर्थ ॥४॥

म्हणे जैराम सत्यव्रत, तिथे मिळे तथ्य ।
फोल मानू नका त्यांत ॥५॥

भजन क्र. १७

[चाल – सख्या माझ्या विठ्ठलारे यावे झडकरी]

सगुण पुजा करी तू देहावरी आहे ।
निर्गुणं देव तुझा, अंतरात पाहे ॥धृ.॥

यांची ओळख जो वरी तुला ।
भूलू नको तू रे देह कर्माला ॥
जें जे दिसे ते ते भासे, तसा तोच आहे ॥ १ ॥

जशी आहे तुझी मती, तैसी मिळे गती ।
तशी तुला घडून येई प्रचिती ॥
तेच तुला आवडे शोधूनी पाहे ॥२॥

चर्म चक्षूच्या डोळ्यांनी दिसे नाशीवंत ।
वेगळाले रुपभारले ते तयांत ॥
मागे दुःख पाठीशी तुझे उभे आहे ॥३॥

स्वरुपी लिन ज्ञान हे अंतरी ।
एकरुप पाही सर्व भूतावरी ॥
विश्वची मानूनी घर, अंती तूच आहे ॥४॥

जैराम म्हणे सगुण निर्गुण हे माया खेळ ।
भ्रमा मध्ये खोवू नका वेळ ॥
हित आपुले परखूनी पाहे ॥५॥

भजन क्र. १८

सुधारावा व्यवहार सुंदर ते आधी ।
जगी पडेना कमतरत्ता कधी ॥धृ.॥

मानवतेचे हेच खरे शहाणपन २ ।
कुणाशी न येवो विट कर्म करावे निट ॥१॥

एक–एक बोल अमृतमय वाणी २ ।
ऐकोणी अज्ञानी होत असे शहाणा ॥२॥

मन बुद्धि मध्ये नको छल कपट २ ।
प्रेम भाव अंतरात जसे गंगेचे जल ॥३॥

जैरामदास म्हणी अंगी भाविकतेचे गुण २ ।
सुख शांती मिळे ऐकूण श्वेत रचना ॥४॥

भजन क्र. १९

[चाल– स्वतंत्र]

गरीबा जवळ आहे इमानदारी, संत आहे त्यांचे कैवारी ।धृ.।

परीश्रमावर जीवन जगती फुकट ना कुणाचे उपकार घेती ।
स्वकर्मावर त्यांचा भरोसा, आहेत हे अटल सिद्धांती ॥
साधू संतावर त्यांची फार निष्ठा, विश्वास ठेवूनी कामे करी ॥१॥

धैर्य ठेवूनी आपुले मनी, कार्य करती निर्भयतेनी ।
संकट समयी ना डगमगती, संकल्प ते पूर्ण करती ॥
अर्धपोटी उपाशी राहूनी, अन्न ना मागे कुणा मुठभरी ॥ २ ॥

हीच तपस्या यांची मोठी, प्रेमाचें बोल तरी यांचे ओठी ।
जैराम म्हणे खरे भाग्यवान, दुःख आणि सुख मानती समान
आमुचे हेच असे श्रम देव, देश समाजाचे खरे कैवारी ॥ ३ ॥

भजन क्र. २०

[चाल– बहोत प्यार करते है]

सज्जनाने नेंहमी सत्यतेने वागावे ।
आपले सुख तिथेच पहावे ॥ धृ ॥

सर्व जीवाशी ठेंवावी आवडी,
दया प्रेमाची बांधावी जोडी ।
नम्रतेचे भाव मनी ठेवावे ॥ १ ॥

दिनदूबळ्याशी मानावे देव,
हेच भक्ति पंथाचे लक्षण ।
सर्वांभूती राम पहावे ॥ २ ॥

मन निर्मळ जैंसे गंगाजळ,
वाणी निघे अमृताहूनी गोड ।
सुख शांती तेथे पहावे ॥ ३ ॥

जैराम म्हणे नर बनतो नारायण,
जीव प्राणी करितो तया नमन ।
शरीर परोपकारी झीजवावे ॥ ४ ॥

भजन क्र. २१

(चाल– इंद्रायणी काठी)

संताचे स्वभाव बाळा प्रमाणे,
जीव्हाळ्याचे प्रेम सर्व जीवा प्रति ॥ धृ. ॥

जागृत स्वप्नी सुषुप्ती तुर्या, भोगती हे चारही अवस्था
लागे नाही आशा तृष्णा त्यांचे पाठी ॥ १ ॥

विदेही राहोणी देहावरी दिसे
अंतरात त्यांच्या ब्रम्हज्ञान ठसे
अंतराची खूण, आत्मज्ञानी जाणती ॥ २ ॥

सोहळा पुरविती श्रद्धा भावे
ब्रम्हरस वाहे नित्य वाचे
विचाराची शांती, धरुनी दृढभक्ती ॥ ३ ॥

जैरामदास म्हणे संताची ही भाषा
जाई त्याचे वंशा तेव्हा कळे ॥ ४ ॥

भजन क्र. २२

[चाल– इंद्रायणी काठी]

आईचे प्रेम बाळावरी जैसे, मुमूक्ष जिवाशि संत प्रेम तैसे
॥ धृ. ॥

अंतरी तळमळ, दिनदुबळचा प्रति
आपला परका भेद नसे ॥ १ ॥
देहाचे ना भान, ब्रम्ह बोध ज्ञान
अंतराची खुन शुण्य जगी वसे ॥ २ ॥
गेले मी तु पण, जगी आपला आपण
झाला नारायण, मकरंद जैसे ॥ ३ ॥
जैराम म्हणे ऐसे निष्ठावान
ब्रम्हानंदा मध्ये झाले ते विलीन ॥ ४ ॥

भजन क्र. २३

[चाल– स्वतंत्र]

प्राण्या तू दोन दिवसाचा पाहूना,
मनी का ठेवीतो दूष्ट भावना ॥ ध्रृ. ॥

इथे कोणाचे चालेना बळ । पाठी मागे लागले रड ।
करतो कशाला नुसती बडबड । वास देता जना ॥ १ ॥

मौज करण्या स्वप्न सुखाची । नसे ते रे तुझ्या हाती ।
दोरी आहे तुझ्या जिवनाची । का फिरतो माया वना ॥ २ ॥

भूलतो तू भ्रमणात । डोक्यावरती तुझे भूत ।
ची ना केलो त्याची ओळखी । भोगशी यम यातना ॥ ३ ॥

जैराम म्हणे अरे लबाडा । जीवणाचा तू रे केला मांतीरा ।
सांगतो तुला पुन्हा पुन्हा । मानवतेला जागना ॥ ४ ॥

भजन क्र. २४

[चाल– इंद्रायणी काठी]

जगी कोणाची करावी आस ।
करती येथे विश्वास घात ॥धृ.॥

शोधूनी पाहीले कुटूंब परिवार । भाऊ बहिण रिश्तेदार ॥
संकट समयी पळती दूर ॥१॥

जगाला सांगतो अनुभव आपुले । दु:ख कष्ट किती सोसले ॥
खोटे मानू नका माझे मत ॥२॥

कामी क्रोधी कितिक जन । परक्याचे दुखविति मन ॥
सत्यवाना करिति फजित ॥३॥

जैराम म्हणे रहा सावधान । केंव्हा करतील तूमचा अपमान
ऐसे किती लबाड भूत ॥४॥

भजन क्र. २५

(चाल– इंद्रायणी काठी)

आपुले दु:खसांगू मी कुणा ।
भरुनी येती अश्रू नयना ॥धृ.॥

अंतरात्म्यातून उठे कळवळा । कोण समझे माझा जीव्हाळा
किती आवरु या मना ॥१॥

आप्त होते ते पारखे झाले । स्वार्थ निघता नाते भूलले ॥
जीव तलमले पुन्हा पुन्हा ॥२॥

हे जग आहे मायेचे पसारे । निती धर्माचे नाही इशारे ॥
फेड ना करीती आपुल्या रुणा ॥ ३ ॥

जैराम म्हणे लटकी माया । स्वहीत भूलले बघूनी धन जाया
कुणी कुणाचे ना होईना ॥ ४ ॥

भजन क्र. २६

[चाल इंद्रायणी काठी]

माझे ना या जगी कोणी ।
स्वहिताचा चक्रपाणी ॥ धृ. ॥

जै जै मिळतील स्वार्थाचे संगी ।
गरज निघता जाती पळूनी ॥
कुणा सांगावी कर्म कहानी ॥ १ ॥

ज्याचे आपण केले भले ।
तोच दाबी आपले गळे ॥
यांचे पायी झाली हानी ॥ २ ॥

दुःख जीवनाचे किती सांगु मी ।
हृदय माझे येते भरुनी ॥
संकटाचा ना मित्र कुणी ॥ ३ ॥

जैराम सत्संगी मिळे विसावा ।
बाकी सर्व दुःखाचा ठेवा ॥
सांभाळूनी चालावे सज्जनांनी ॥ ४ ॥

भजन क्र. २७

(चाल– इंद्रायणी काठी)

शरीर तिजोरी श्वास तुझे धन ।
ठेवी तू जपून निती नियमानें ॥ धृ. ॥

एक एक श्वास अमोल किमतीचें ।
सुख मिळे तुझ्या, जीवनाचे ॥
खोवु नको व्यर्थ होईल तूज त्रास ॥ १ ॥

पालन करी मानवतेचे ।
कार्य करीन स्वहिताचे ॥
ज्ञान, बुद्धि, विवेक, तुज पाशी असे ॥ २ ॥

पदरी पूण्य अनंत जन्माचे ।
क्षण शेवटला साधण्याचे ॥
हित आपुले ओळखूनी चाल ॥ ३ ॥

जैराम म्हने खोवू नको वेळ ।
टपून बसला आहे काळ ॥
तरी तू रे गोड नाम स्मरणाने ॥ ४ ॥

भजन क्र. २८

[चाल– इंद्रायणी काठी]

संताच्या सान्नीध्यात सुख शांती मिळे ।
मिटे दु ख क्लेश संगतीपायी ॥ धृ ॥

आशा, तृष्णा, मनसा क्षणात मिटे ।
स्फूर्ती उमंग हृदयात उठे ॥१॥
जीव होई दंग पाहुनिया रंग ।
शांती समाधान उणे काय मग ॥२॥
असा लाभला संत सहवास ।
प्रपंचाची आस सुटली त्याची ॥३॥
जैराम म्हणे पूर्ण झाला सोहळा ।
जीवाचा जीव्हाळा आई बाळाचा लळा ॥४॥

भजन क्र. २९

[दिवानो से ये मत पुछों]

मानवा जीवनाचा करु नको मातेरा ।
अंत:काळी चागेल येर झारा ॥धृ.॥
लई जन्माचे तुझे हे पूण्य ।
मानवतेशी ठेवी जपून ॥
अशी संधी ना मिळे पुन्हा ।
बघून पाऊल टाकी जरा ॥१॥
जिथे मिळे सुख शांती ।
तिथेच करावी आपुली वस्ती ॥
तैसे कार्य येई हाती ।
फिरु नको सैरा वैरा ॥२॥
सत्य विचार ठेवी पोटी ।
पाहण्याशी तो जग जेठी ॥
जैराम म्हणे भाव एक निष्ठ ॥३॥

भजन क्र. ३०

[दिवानोसे मत पुछों]

आत्म सुखाचा मार्ग गाठ ।
हेच मानवतेचे थाट ॥धृ.॥

पठन केले शास्त्राचे ।
अनुभव ना मानवतेचे ॥
प्रेम नाही जीव्हाळयाचे ।
जीवन ऐसे फुकट ॥१॥

वेदांती सिद्धांताचा भेद ।
संत लावी त्याचा शोध ॥
काय समजे मति मंद ।
पाठी लागली उठ बस ॥२॥

जीवनात पडली आटाआटी ।
मुखी नाही दया धर्म गोष्टी ॥
जन्म घेवूनीं राही कष्टी ।
असा हा लंपट ॥३॥

जैराम म्हणे मार्ग चुकला ।
खऱ्या मार्गाशी तू मुकला ॥
दिन दुबळ्याच्या कामी न पडला ।
पोपट पंची गाती भाट ॥४॥

भजन क्र. ३१

[चाल्– अवताराचे कार्य कराया]

देश धर्माचे कार्य कराया; गरज आहे आज श्रमदेवाची ।
सुख शांती घरोघरी नांदे, उन्नती होईल राष्ट्राची ।धृ.।

इमानदारीचे कार्य कराया, हित सर्वांचे पाहण्यासाठी ।
बंधू भावाचा प्रेम ठेवूनी, वृत्ती ठेवा मनी कार्यांची । १ ।

द्वेश भाव हे विसरुनी सारे, पहा तुम्ही आपुले हित ।
दुष्टालाही मित्र करुनी, सांगड घाला कामरामाची । २ ।

गरज पडे कोणा जरी, धावूनी जाती लवलाही ।
अज्ञान भ्रांती सोडूनी सारी, वेळ आली गुडी उभारण्याची
। ३ ।

जैराम म्हणे विसरु नका, कथा ही मानवतेची ।
मातृभूमीचे कर्ज फेडण्या, लावा बाजू देहाची । ४ ।

भजन क्र. ५५

[तर्ज- छोटीसी, प्यारीसी, नन्हीसी]

श्रम करके जो जीवीत रहे, जगमे रहा उसका नाम
वो ही सारे जीवको देता, इश्वर का पैगाम
दिन दुखीयोमे देखे, राम और शाम
कर्म अपने करता रहे हरदम निष्काम
इन्सानियत वो ही जाने, जो है नितीवान
जय श्रमदेवा, बोलो जय श्रमदेवा ॥घृ.॥

काम और राम के गित गावो, उसमेही सबकी है भलाई
कर्म करने से भाग्य जागे, जीवन ना होवे कभी दुखदायी
अपने बलबुते पर जो जीता है, उसकोही समाज का सच्चा
हित है
सब जीवको माना जिसने आत्माराम ॥१॥

रुप ना देखो, तुम किसीका, स्वरुप की पहचान करो
छोड दो सारी, पाखंड बाते, संतो का तुम संग धरो
चमडे की जों परख करे वो है मोची, ध्यान दो ना उसके
उपर बाते है थोती

वो क्या बना सके दानवको इन्सान ॥२॥
निती नियम से जो भी चलता, मिली है उसको हरदम शांती
सत्संगत मे जो भी नहाये मिटी है उसके मन की भ्रांती
ब्रम्ह को जो जाने वो ही है रे ब्राम्हण, अज्ञानी को दिया
जिसने तरने का ज्ञान
वो ही सबका शांती दाता कहे अैराम ॥३॥

आरती

चाल– (आरती दिनदयालूची)

संत दर्शने जळती पापे
बाधे ना तयाशी त्रितापे ॥ धृ ॥

कसले ना बाधे तया दुखे
यम दंडातुनी तो चुके
शिल नम्रता जया मुखे
करुणा सर्वांची ऐके

चाल– कशाची ना भिती तया लागी

सद्‌गुरु तयाचा जिवलगी
दुष्ट हा कितीही तपे
महिमा नाम प्रतापे ॥ १ ॥

देव भक्तांचा अंकित
पुरवि त्यांचे मनोरथ
सवंगडी त्यांचा तो होत
प्रण त्यांचे तो निभवित

चाल– तिन्हीं देव शरणांगत

ठेऊ नका शंका मनात
कुणाचे ना त्यानें भले होत
सर्व ठायी पाही एक रुप ॥ २ ॥

विकल्प सोडूनी मनाचा
निजध्यास ठेवा आत्म्याचा
विचार पोटी सत्याचा
ज्ञान निष्काम भावाच

चाल– द्वैत नसावा जिवाचा

सर्व ठायी वास रामाचा
वृत्ती निवृत्तीत रमे
वाणी चाले गुरुकृपे ॥ ३ ॥

जैराम म्हणे अटल निश्चय
त्याला नाही कुणाचे भय
अर्पन केला हा देह
सर्व ठायी लाभे त्याला जय

चाल– पद मिळाले अभय

संत देव एक होय
एकात पाही अनेक रुपे
त्या ज्ञानाचे होईना मापे ॥ ४ ॥

भागवत प्रिंटींग
प्रेस,
टि. हाऊस चौक, मेन रोड,
भिवापूर